जनकर्म मध्य

हिंदी विभाग के तत्वावधान में व्याख्यान माला का आयोजन

पामगढ़, दुर्ग, खरसिया, सारंगढ़, रायगढ़ के अतिथि वक्ताओं का उद्बोधन, एम. ए. हिंदी के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम आधारित व्याख्यान

रायगढ़ । किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान अग्रणी महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. ए. के. तिवारी के मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ. मीनकेतन प्रधान के निर्देशन में स्नातकोत्तर हिंदी के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम आधारित प्रांतीय व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। ऑफ़लाइन एवं ऑनलाइन दोनो माध्यमों में आयोजित इस प्रांतीय व्याख्यान माला में शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय रायगढ़ के डीन एवं शासकीय महाविद्यालय पामगढ़ में पदस्थ प्राध्यापक डॉ. डी. एस. ठाकुर, शासकीय किशोरी मोहन त्रिपाठी कन्या महाविद्यालय में पदस्थ प्रो. बी. के. भगत, महात्मा गाँधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया में पदस्थ हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार टण्डन, शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय महाविद्यालय सारंगढ़ में पदस्थ प्रो. दिनेश पैंकरा एवं हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग छत्तीसगढ़ के पी-एच.डी. शोध छात्र सौरभ सराफ अतिथि वक्ता के रूप में एवं शासकीय के.एम.टी. कन्या महाविद्यालय रायगढ़, शासकीय महात्मा गाँधी महाविद्यालय खरसिया, शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय महाविद्यालय सारंगढ़ के स्नातकोत्तर के विद्यार्थी सम्मिलित हुए। आयोजन के प्रारंभ में विभागाध्यक्ष डॉ. मीनकेतन प्रधान ने अतिथि वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए इस महत्वपूर्ण व्याख्यान माला की उपादेयता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि कोरोनाकालीन विकट परिस्थितियों की लम्बी अवधि के उपरांत परिस्थितियाँ सामान्य हुई है ऐसे में विद्यार्थियों के बौद्धिक और

अकादमिक विकास के लिए निरन्तरता में इस प्रकार के आयोजन का होना आवश्यक है। उन्होंने स्नातकोत्तर द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम आधारित इस व्याख्यान माला को विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। तत्पश्चात वक्ताओं का उद्बोधन प्रारम्भ हुआ, जिसमें सर्वप्रथम डॉ. डी. एस. ठाकुर ने अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने साहित्य जगत में कथा सम्राट के नाम से विभूषित मुंशी प्रेमचंद की सर्वोत्तम रचना गोदान पर प्रकाश डाला। अपने उद्बोधन में गोदान को कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में निरूपित करते हुए कृषक जीवन की व्यथा-कथा को समग्रता से विश्लेषित किया एवं गोदान के पात्रों के माध्यम से किसानों को होने वाली सामाजिक आर्थिक कठिनाइयों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेमचंद के सम्पूर्ण साहित्य विशेषकर गोदान का गहराई से अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया। आयोजन की अगली कड़ी में पी-एच.डी. शोधार्थी सौरभ सराफ ने प्रेमचंद की साहित्यिक यात्रा को विश्लेषित करते हुए गोदान के महत्व का रेखांकन किया। उन्होंने प्रेमचंद के कथा साहित्य का वैशिष्ट्य निरूपण करते हुए आदर्शवाद, आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद एवं चरम यथार्थवाद पर प्रकाश डाला एवं प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य के अंतर्गत प्रेमाश्रय और सेवासदन से गोदान तक कि यात्रा के विभिन्न पड़ावों को सूक्ष्मता से विवेचित किया। वक्ताओं की अगली कड़ी में प्रो. दिनेश पैंकरा ने मैला आँचल की आंचलिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने उद्बोधन में आँचलिक उपन्यासों की श्रृंखला में मैला आँचल को मील के पत्थर के रूप में रेखांकित किया। फणीश्वरनाथ रेणु के सम्पूर्ण साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें आँचलिक उपन्यासकारों में अग्रिम पंक्ति का रचनाकार बताया। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ी उपन्यास की विकासयात्रा पर डॉ. रमेश कुमार टण्डन ने प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी एवं अन्य भाषाओं के साहित्य के साथ ही छत्तीसगढ़ी के महत्व का रेखांकन करते हुए छत्तीसगढ़ी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया। डॉ. टण्डन ने छत्तीसगढ़ी भाषा में ही सरल सहज ढंग से अपना विचार व्यक्त किया। तत्पश्चात अंतिम वक्ता के रूप में प्रो. बी. के. भगत का व्याख्यान हुआ। अज्ञेय के काव्य साहित्य को विश्लेषित करते हुए उनकी प्रसिद्ध कविता असाध्य वीणा के भावबोध की उन्होंने विस्तृत समीक्षा की। कविता के महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या करते हुए उसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डाला। अंत में विभाग के सदस्य प्रो. उत्तरा कुमार सिदार ने सभी व्याख्यानों का सार भी बताते हुए आभार प्रदर्शन किया।